Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

जोधपुर जिला में ऐतिहासिक एवं तीर्थ पर्यटन (बिलाड़ा क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ मे)

रतनलाल*

राजस्थान राज्य के जोधपुर जिले में स्थित 'बिलाड़ा क्षेत्र' पश्चिमी शुष्क प्रदेश का एक प्रमुख ऐतिहासिक एवं तीर्थ पर्यटन क्षेत्र है। यह क्षेत्र श्री आईजी, राजाबली, सत शिरोमणि बाला सतीजी की तपोभूमि तथा प्रमुख पीठ, पार्श्वनाथ मन्दिर जैसे महत्वपूर्ण स्थलों के लिए भारत सहित विश्वभर में जाना जाता है। पर्यटन की दृष्टि से इस क्षेत्र का सांस्कृतिक ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है।

प्राचीन ग्रन्थों में इस क्षेत्र को नखलिस्तान (मरू उद्यान) के सनतुल्य बताया गया है। बिलाड़ा तहसील क्षेत्र $26^{0}1'$ उत्तरी अक्षांश से $26^{0}30'$ उत्तरी अक्षांश तथा $73^{0}24'$ पूर्वी देशान्तर से $73^{0}52'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह जोधपुर जिले की 7 तहसीलो मे से एक है। क्षेत्र मे पश्चिमी राजस्थान की मुख्य लूनी नदी व स्थानीय बाण गंगा प्रवाहित होती है।

जोधपुर का प्रमुख जसवन्तसागर बाँध इसी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ वार्षिक औसत वर्षा 353 मिलीमीटर होती है। 2011 की जनगणना के अनुसार बिलाड़ा तहसील की कुल जनसंख्या 2,84,059 व्यक्ति है। क्षेत्र का जनघनत्व 174 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. तथा कुल साक्षरता प्रतिशत 53.85% है। इसका क्षेत्रफल 1630 वर्ग किमी (नवसृजित पीपाड तहसील सहित) है। क्षेत्र में उष्ण–शुष्क जलवायु पायी जाती है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 112 इस क्षेत्र के मध्य से गुजरता है। नीम, खेजड़ी, जाल, केर व बबूल प्रमुखता से पायी जाने वाली वनस्पती है। मसालों की कृषि व दुग्ध व्यवसाय के रूप में इस क्षेत्र की राष्ट्रीय महत्ता है।

बिलाडो बलिराज रो, माँ आई रो थान।

गंगा बैहवे गोर वे, नित रा करो सिनान।।

विरख – विरख है देवतरू, चित्या है सब काज।

हर रो मिन्दर हरख नें, धिन–धिन पाँचू धाम।।

बिलाड़ा आईपंथ का उद्‌गम स्थल है। यह माँ आईजी व दानवीर राजा बलि की तपोभूमि है। यहा राजा बलि के बाण से प्रस्फुटित गंगा की पावन जल धारा का बहाव (बाण गंगा), कल्पवृक्ष, कदम्ब की लचीली डाल, पौराणिक इतिहास संजोये हर्षदेवल, कन्दरावासिनी डीगड़ी माता, तपस्वी दीवान रोहितदास जी की तपोस्थली रनिया बेरा, वचनसिद्ध का साक्ष्य जोड़, माँ आईजी की मोजड़ी की धूल से बनी 'जीजीपाल', बालियावास का गजानन्द मन्दिर, राजा बलि का मन्दिर, सन्त शिरोमणि बाला सती धाम, श्री जैन श्वेताम्बर प्राचीन तीर्थ कापरड़ाजी, जसवन्त सागर बांध, खेजड़ला फोर्ट व चान्देलाव फोर्ट जैसी हेरिटेज होटल, गौरक्षार्थ शहीद हुए लोगों की छतरियां आदि बिलाड़ा क्षेत्र को ऐतिहासिक, सास्कृतिक एव तीर्थ नगरी के रूप में ख्याति प्रदान करते हैं। क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थल निम्न है–

*शोधार्थी।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

श्री आई माता मन्दिर

यह मन्दिर बिलाड़ा नगर में स्थित है। यह मन्दिर श्री आईजी व आईपंथ का प्रथम व पावन धाम है। जिसकी ख्याति सम्पूर्ण भारत में है। इन्हीं की प्रेरणा एवं प्रभाव से सम्पूर्ण भारत में इनके मन्दिर शाखाओं के रूप में स्थित है। यह अनूठा मन्दिर भक्त निर्मित नहीं होकर स्वयं भगवती आईजी द्वारा निर्मित है क्योंकि इस स्थान पर आई माता जी ने अपनी साधना के अनुरूप इसका निर्माण करवाया। निज मन्दिर में गुफानुमा साधना कुटी है। यहां पांच सौ वर्षों से अखण्ड ज्योति जग रही है। इस अखण्ड ज्योति की लौ से काजल के स्थान पर केसर झरता है।

विक्रमी संवत् 1561 चैत्र सुदी दूज शनिवार के दिन यहां एक साधारण कक्ष (कोटड़ी) में श्री आईमाता अन्तर्ध्यान हुए थे। इस मन्दिर में माँ आईजी की साधना के समय की गादी, अखण्ड ज्योति, पाँच श्रीफल (नारियल), छड़ी, चोला, खड़ाऊ (मोजड़ी) माला और ग्रन्थ आज भी सुरक्षित है, जो आज भी यहां माँ आईजो की उपस्थिति के प्रतीक हैं।

विक्रम संवत् 1472 में गुजरात प्रदेश के अम्बापुर में 'बीकाजी डाबी' के यहाँ अवतरित नवदुर्गा के शैलपुत्री रूप भगवती 'श्री आईमाताजी', जो आईपंथ का प्रचार करते हुए गोडवाड़ क्षेत्र से होकर बिलाड़ा पधारे थे तथा सीरवी जाणोजी राठौड़ के पौत्र एवं 'माधवदास' को अपनी गादी का प्रथम दीवान नियुक्त कर अखण्ड ज्योत की स्थापना की। इन्होनें नीम के पेड के नीचे आई पंथ का प्रचार किया। इन्होने अपने अनुयायियों को 11 नियम पालना की सीख दी, जिससे मानव कल्याण हो सके। विभिन्न जाति वर्गों के लोग आईपंथ के अनुयायी हैं जो सामाजिक समरूपता का अनूठा प्रतीक है। इनके मुख्य अनुयायी सीरवी (खारड़िया) जाति के लोग है। आज भी उनके प्रमुख उत्सवों पर तथा बड़े दिन (प्रतिमाह को शुक्ल बीज) पर लाखों श्रद्धालु व पर्यटक दर्शनार्थ आते हैं।

मन्दिर में लोहे को बड़ी सांकल लटक रही है जिसको पकड़कर सिद्ध दीवान रोहितदास जी ने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की थी। समीपस्थ ही पोला महल (भूलणिया महल) है जिसके एक दरवाजे में प्रवेश पाने पर वापस नहीं आ सकते हैं। यह भूलभूलैया स्थापत्य कला का बेजोड़ उदाहरण है। इस महल का नक्शा आज भी एक पत्थर पर उत्कीर्ण किया हुआ महल के आगे स्थित है।

काँच महल (शीश महल) के मुख्य द्वार पर हाथीदांत की जड़ाई का काम किया हुआ है। दोनों महलो की भीतरी दीवारों पर मुगलकालीन भित्तिचित्र आज भी सुरक्षित है। इनमें श्रृंगार रसपूर्ण, होली, रंग पंचमी के चित्र महत्वपूर्ण है। मन्दिर के मुख्य द्वार पर दो सिंहों की संगमरमर मूर्तियां है। मन्दिर के ऊपर बनी झोंपड़ी वर्षों से आंधी–चक्रवातों में स्थिर है। निज मन्दिर में कक्ष में चौतरफा काच जड़े हैं जिसमें देवी की ज्योति झलकती है। बिलाड़ा के बडेर चौक में मुख्य मन्दिर के बीच तीन बड़ी पोल (प्रतोलिया) हैं।

मन्दिर नें एक बड़ा संग्रहालय है जो क्षेत्रीय कला, संस्कृति, सभ्यता, आध्यात्मिकता और ग्रामीण संस्कृति को जीवंत करता है। यहां चैत्र सुदी बीज, वैशाख सुदी बीज, भादवा सुदी बीज व माघ सुदी बीज को मेले भरते हैं। इनमें भादवा सुदी बीज मेला स्थानीय कुम्भ मेले के समान है। इस मन्दिर को 'बडेर' भी कहा जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु व पर्यटक दर्शनार्थ आते हैं।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

रनिया बेरा

बिलाड़ा से 6 किमी. पूर्व में स्थित चमत्कारी तीर्थ धाम 'रनिया बेरा' दीवान रोहितादासजी की प्रिय तपोभूमि रहा है। पास में 1200 बीघा गोचर भूमि और चारों तरफ सैकड़ों कुए है। इस गोचर में चार छोटे तालाब भी है। इस भूमि में बिलाड़ा–उचियार्ड़ा के सभी जातियों के लोग सामूहिक रूप से खरीफ की फसलें बोते हैं। इस प्रकार 'सहकारी खेती' का धार्मिक उदाहरण है। यहां रोहितदासजी का मन्दिर और बाबा जोगेश्वर का मन्दिर है। पास में गौशाला संचालित होती है।

बाण गंगा

बिलाड़ा नगर के उत्तर में दो किलोमीटर दूरी पर स्थित पावन तीर्थ स्थल 'बाण गगा' पौराणिक तीर्थ माना गया है। यहा 55 फुट गुण 48 फुट के पुरूष कुण्ड में दो घाट बने हुए है। कुण्ड का पानी इतना साफ होता था कि पेंदे में पड़ा सिक्का भी साफ दिखाई दे जाता। निज कुण्ड में दक्षिणी पश्चिमी कोने से नागाबाबा के स्थान से पर्याप्त पानी की आपक है। इस कोने में अन्दर तक खोखला स्थान है जिसमें पानी भरा हुआ है।

कुण्ड के घाटों में पत्थर की बड़ी–बड़ी बुरजें है। यह जिज्ञासा का विषय है कि प्राचीनकाल मे ये कैसे उतारी गई होगी। पास में 33 फुट गुणा 26 फुट का जनाना कुण्ड है। इसमें स्त्रियों के स्नान के लिए जंजीरे लगी हुई है।

यहां 'गंगा माई' के प्राचीन मन्दिर में चतुर्भुजी प्रतिमा है। समीपस्थ विशाल पीपल वृक्षों पर 'भंवरमाल' है। सामने एक कीर्तिस्तम्भ है जिसका चबूतरा मिट्टी में दब चुका है। पास मे पुराने शिवालय पर नागपाश और राजाबलि के पाताल गमन की मूर्ति दर्शनीय है। 1979 ई. में भयंकर बाढ़ के दौरान यहां की पुरातात्विक धरोहरें धराशायी हो गई, वही पर बाढ़ के कटाव से समीपस्थ भूमि के अन्दर से कुछ मकानों के खण्डहर व पत्थर के बडे–बडे बर्तन निकले थे। इस आधार पर कह सकते है कि यहां पर भी प्राचीन नगरीय सभ्यता रही होगी जो किसी पूर्ववर्ती बाढ़ में ध्वस्त हो गई होगी।

हर वर्ष चैत्र मास की अमावस्या के दिन बिलाड़ा के पारा बाणगंगा में 'नौ रातियों का मेला' भरता है। लोकधारणा है कि यहीं पर राजा विरोचन की नौ रानियां एक साथ सती हुई थी। सरकार ने अब सती महिमा मण्डन पर रोक लगा दी है। अत अब 'गंगा मैया का मेला' नाम से यहां मेला भरता है। यहाँ एक आकार के नौ अलग–अलग चबूतरे है।

बड़ेर का जोड़

'जोड़' से तात्पर्य हरी भरी घासयुक्त गोचरभूमि है। बिलाडा से चार किमी जेलवा मार्ग पर स्थित 'जोड़' में सिद्ध पुरूष रोहितदासजी का चमत्कार आज भी पर्यटकों के लिए कौतूहल का विषय है। इस जोड़ (चारागाह) में रोहितदासजी के घोड़े के चलने से दो भागों में बंटवारा हुआ। एक भाग में दीवानजी के जोड़ का घास व बिना सिट्टा (बालिया) का उगता है जबकि जोधपुर दरबार की जोड़ में सफेद सिट्टे वाला घास उगता है। घोड़े के चलने की पगडण्डी पर आज भी घास नहीं उगती है। कृषि वैज्ञानिक लाख कोशिश करने कर भी इस चमत्कार का वैज्ञानिक कारण नहीं ढूंढ पाए है। यह एक शोध पर्यटन भी है।

डींगड़ी गाता का मन्दिर एवं नैसर्गिक कंदरा गुफाएं

बिलाड़ा से 6 किलोमीटर दक्षिण दिशा में छोटी–मोटी पहाड़ियों के बीच हरे–भरे वातावरण में स्थित वातावरण में स्थित

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

डीगड़ी माता का मन्दिर और चार गुफाए पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

लोकधारणा है कि इनमें से एक गुफा बिलाड़ा से 20 किमी. उत्तर–पश्चिम में खेजड़ला गांव तक जाती है। दूसरी गुफा नारलाई गांव (जिला पाली) तक जाती है, जहां श्री आईजी ने भारी शिला हटाकर प्राकृतिक गुफा में प्रथम अखण्ड ज्योति जगाई थी। तीसरी गुफा पाली में पूनागर की भाखरी और चौथी गुफा बर की घाटी की तरफ जाती है। इनमें से तीन गुफाएं देवी मन्दिरों तक जाती है और चौथी गुफा सम्बन्धी अनुमान है कि कहीं बर के जंगलों में देवस्थान से सम्पर्क होगा। पुराने जमाने में साधु इन गुफाओं में तपस्या करते रहे हैं। इन्हीं गुफाओं में बिलाड़ा के योगी सन्त रामनाथ जी महाराज योग साधना से अपने शरीर को सिह रूप में बदल देते थे।

कल्पवृक्ष

पौराणिक मान्यता है कि समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में एक कल्पवृक्ष भी था। कल्पतरू के अन्य नाम है– सुर तरू, देवद्रुम, गोरख इमली, गोनिक चिन्टज, हड्डी कट्टियन, बाओबाब आदि।

राजस्थान में मांगलियावास (अजमेर) में तीन विशाल कल्पवृक्ष है। इसके अलावा बलून्द (टोंक), बिलाड़ा (जोधपुर), शाहपुर (भीलवाड़ा), आलोट (झालावाड़), उदयपुर और बांसवाड़ा में जीवित कल्पवृक्ष है। बिलाड़ा से दो किलोमीटर पूर्व की ओर कल्पवृक्ष का पुराना वृक्ष है इसका तने का घेराव 260 इंच (बाईस फुट) है। दिखने में कठोर छाल रूई की भांति कोमल है। इस वृक्ष पर फूल ही आते हैं, फल नहीं लगते है। लोग इसकी पत्तियों को पालक की तरह सब्जी में काम लाते हैं। यहां प्रति वर्ष हजारों श्रद्धालु आते हैं और यह वृक्ष उनकी मनोकामनाएं पूरी करता है।

माटमोर का बाग

बिलाड़ा के छठे दीवान राजसिंह जी ने तत्कालीन हर्ष गांव के पास बहुत बड़ी पाल (मिट्टी की दीवार) बनाई। मारवाड़ी बोली में 'माट' का अर्थ है मिट्टी की पाल। उन्होने तालाब के पास सुन्दर बगीचा लगवाया। यह बिलाड़ा के पूर्व दिशा में 3 किमी. दूरी पर चोपड़ा फीडर नहर के किनारे स्थित है। बगीचे में पहले शताधिक किस्म के पेड–पौधे थे। बाग के बाहर 'सती कागणजी की जीवित समाधि' है। साथ ही दीवान हरिदास जी और राजसिंह जी की छत्रियां बनी हुई है।

अमर हुतात्मा स्मारक

यह स्मारक बिलाड़ा नगर में श्री आईमाताजी के मन्दिर के सामने स्थित है। आई माता के परम भक्त दीवान रोहितदासजी की बढ़ती लोकप्रियता के चर्चे सुनकर तत्कालीन मारवाड नरेश मोटाराजा उदयसिंहजी ने राहितदासजी को चमत्कार दिखाने के लिये बिलाड़ा से जबरन जोधपुर दरबार में बुलाया। अनुयायियों द्वारा इसे अपमान समझ मना करने पर हुए संघर्ष में 150 सीरवियों (किसानों) ने विक्रमी संवत् 1680 में बडेर चौक में अपना बलिदान किया। यह मारवाड़ की अनूठी स्वामिभक्ति परक शहादत थी। तत्कालीन हुकूमत ने वर्तमान बडेर चौक के स्थान पर गहरे गड्ढे में उनका सामूहिक अन्तिम संस्कार किया था। आज वहां पर शहीद स्मारक बना हुआ है तथा सीरवी समाज द्वारा यहां 'शहीद मेले' का आयोजन किया जाता है।

हर्षदेवल–शिवमन्दिर

बिलाड़ा से 6 किमी. पूर्व में सूर्योपासना की स्थिति में जीर्ण– शीर्ण–जर्जर खण्डहर प्राय: हर्षादेवल पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हर्षदेवल, बाणगंगा और

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

लम्बा गांव में बने देवलों में बनावट में एकरूपता है।

इस देवल के पास खण्डहर रूप में चौबीस घाट है। लोकधारणा है कि ये चौबीस घाट चौबीस बगड़ावत भइयों की रानियों के नहाने के लिए बनाए गए थे। चौबीस घाट की बावड़ी और शिवालय के निर्माण सम्बन्धी प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती है क्योंकि यहां लगे शिलालेख में संवत् 1233 तो अंकित है परन्तु अन्य अक्षर सुपाठ्य नहीं रह गये हैं। यह मन्दिर बिना चूना व गारे के सहयोग से केवल पत्थरों की सुसंजित जड़ाई से ही निर्मित है।

दानवीर राजा बलि का पावन धाम

बिलाड़ा नगर से 4 किमी. पश्चिम में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 112 पर स्थित पिचियाक गांव में 'राजा बलि का पावन धाम', घी तलाई, गजानन्द मन्दिर और हनुमान मन्दिर सहित दर्शनीय स्थल है। इस उच्च भू भाग को "बलिराजा की भाखरी" के नाम से भी जाना जाता है। पिचियाक का पुराना नाम 'पंच याग' माना गया है जो कि यहां राजाबलि द्वारा किये गये पंचयज्ञ' का अपभ्रंश प्रतीत होता है।

ऐसी स्थानीय मान्यता है कि इस पहाड़ी (भाखरी) पर राजा बलि द्वारा 99 यज्ञों में से पांच यज्ञ किये गये थे। यहां प्राचीन यज्ञशाला (कुण्डमण्डप) के अवशेष है, जिसमें देव स्थान की चार पीठें व यज्ञकुण्ड है। यज्ञों हेतु घी इकट्ठा करने का कुण्ड बना था, जो कालान्तर में मिट्टी ढहने से छोटी सी तलाई के रूप में अवशिष्ट रह गया है।

आज भी बरसात में यहां पानी पर चिकनाहट तैरती रहती है, जो इसके प्रमाण लगते है। राजा बलि द्वारा अपने बाण से जल उद्गम किया गया, वहां से अनवरत् कई वर्षों तक जल प्रवाहित होता रहा। इस स्थान को 'बाणगंगा' कहा जाता है। भाखरी से बिलाड़ा तक 5 मील की दूरी में धाधड़ा पत्थर निकलता है जो प्राचीन चूनायुक्त मार्ग की पुष्टि करता है। पहाड़ी के चारों तरफ लाल ईंटों से बने परकोटे के अवशेष प्रतीत होते हैं।

भाखरी (पहाड़ी) पर प्रतापी दानवीर राजा बलि का मन्दिर बना हुआ है, जिसमें अश्वमेध यज्ञ के दौरान राजा बलि द्वारा वामन अवतार भगवान विष्णु को तीन पग (कदम) जमीन लेते हुए बताया गया है। इस मन्दिर का सरगरा समाज द्वारा भव्य निर्माण करवाया जा रहा है।

यह मन्दिर इनका मुख्य धाम व राजाबलि मुख्य आराध्य देव हैं। यहां पांचजन्य शंख आज भी विद्यमान है। मन्दिर में राजा बलि के संदेश व आध्यात्मिक विचार जन–जन तक पहुंचाने हेतु धर्मरथ (भेल) भी है।

संत शिरोमणि बालासती धाम

बिलाड़ा नगर के पश्चिम में लगभग 20 किमी. तथा जयपुर–जोधपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 112 के 10 किमी. अन्दर की ओर 'संत शिरोमणि बाला सती पावन धाम' स्थित है।

यह स्थल प्रेम, दया, सेवा, सहानुभूति की प्रतिमूर्ति माँ रूपकंवर जी (बाला सतीजी) की तपोस्थलि रहा है। सन्त शिरोमणि श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। जीवों पर दया भाव, दीन–दुखियों की सहायता करने वाली संत ने लगभग 45 वर्षों तक अपनी क्षुधा, प्यास और निन्द्रा पर पूर्ण अंधिकार किया था। वे महान् तपस्विनी व योगीनी थे। इनके जीवन में एकादशी का बड़ा महत्व रहा है। इस धाम में अनेक देवी–देवताओं के मन्दिर भी बने हुए हैं। यहां प्रतिवर्ष मेला भरता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

यह मन्दिर अति सुन्दर व मनोहारी है। आध्यात्मिक शान्ति के लिये यहां देशी–विदेशी पर्यटक आते हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर प्राचीन तीर्थ कापरड़ाजी

यह तीर्थ स्थल जोधपुर–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर जोधपुर नगर से 50 किमी. तथा बिलाड़ा नगर से 27 किमी. दूरी पर कापरड़ा ग्राम में स्थित है। श्वेताम्बर जैन के प्रमुख तीर्थों में इस तीर्थ स्थल की गणना प्रमुखता से होती है।

लगभग 500 वर्ष प्राचीन, स्थानीय पाषाण से भानाजी भण्डारी द्वारा निर्मित यह ऐतिहासिक तीर्थ स्थल है, जिनकी गिनती 108 पार्श्वनाथ में होती है। इस जिनालय के शिखर की ऊंचाई भूतल से 95 फीट है, जो नलिनिगुल्म विमान की आकृति वाला है। शायद सम्पूर्ण भारत में यह एक ऐसा जिनालय है, जिसकी चारों मंजिल में चौमुखी प्रतिमाएं विराजमान है। ऐसी मान्यता है कि यहां विराजित मूलनायक परमात्मा श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ दादा अति विलक्षण है। जो यतिजी म.सा. के स्वप्न में आकर, भूमि जो गाय के दुग्ध धारा से स्वतः सिंचित होती थी, उस भूमि पर से तीन और प्रतिमाओं के साथ प्रकट हुए। यहां स्थापित तीर्थ अधिष्ठायक क्षेत्रपाल श्री भैरवनाथ अत्यन्त चमत्कारी है, जो मुख्य मन्दिर के सम्मुख है। निकट ही आधुनिक सुख–सुविधायुक्त धर्मशाला भी बनी हुई है। स्थापत्य, शिल्पकला एवं आध्यात्मिक दृष्टि से यह मन्दिर अति महत्वपूर्ण है। वर्तमान में इसका जीर्णोद्धार चल रहा है। यहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं।

बिलाड़ा के समीपवर्ती अन्य धार्मिक पर्यटन स्थल

समीपवर्ती भावी गांव में विशाल शिवतालाब के पास प्राचीन शिवमन्दिर में भी केसर झरता है। तालाब की पाल पर प्राचीन छतरियां व शिलालेख अब सुपाठ्य नहीं रह गये है। पाल पर गणेशगिरी जी व भक्त भलराज जी आगलेचा की जीवित समाधि (मढ़ी) है। गांव में पार्श्वनाथ मन्दिर, चारभुजा मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, शीतला माता मन्दिर, टावण्डा बालाजी मन्दिर, गणेश मन्दिर इत्यादि प्राचीन मन्दिर हैं। भावी गांव कई बार उजड़ा बसा है। ऐसी लोकधारणा है और कतिपय शिलालेखों में भी इसके प्रकीर्ण सूत्र मिलते हैं। गांव में गजनवी के समय में एक ध्वस्त तैतीस करोड़ देवी–देवताओं का मन्दिर है, जिसके शिलालेख उपलब्ध नहीं है।

बिलाड़ा से अठारह किमी. दूर पड़ासला कलां गांव की भाखरी पर माताजी का मन्दिर है। यहां 365 सीढ़ियां है। शिखरस्थ मन्दिर से आसपास के गांवों व खेतों का मनोहर दृश्य देखते ही बनता है।

खेजड़ला गांव में माताजी का मन्दिर और खेजड़ला फोर्ट पर्यटनीय स्थल है। लोकगीतों में प्रसिद्ध टेर है–''खेजड़ले री अम्बा माता, नाहर ने सिणगारै रे।।''

बिलाड़ा से 17 किमी. दूरी पर लाम्बा गांव में भी बिना चूना–गोर से निर्मित देवल है। लोक मान्यता है कि इसे एक ही रात में बनाया गया था। यह देवल स्थापत्य कला की दृष्टि से हर्षादेवल के समान है।

'मरूधरा के कश्मीर'' की संज्ञा से विभूषित बिलाड़ा क्षेत्र के गौभक्त किसानों ने गौरक्षार्थ प्राणोत्सर्ग किये हैं। इनके शहीद स्मारक भावी में पाताजी आगलेचा, बिलाड़ा में जूंझारजी, भावी में नाहरसिंह जी, भावी में भोमियाजी और अन्य बीसियों स्थानीय छतरियों में शिलालेख इसके प्रमाण है। बिलाड़ा के पास उदलियावास गांव में रामदेवजी का मन्दिर, पिचियाक में गणेश मन्दिर, मालकोसनी में निर्माणाधीन भव्य तेजा मन्दिर आदि उल्लेखनीय हैं।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

जसवन्त सागर बांध

यह बांध बिलाडा नगर से 4 किमी. उत्तर में लूनी नदी पर बना हुआ है। पिचियाक' में स्थित होने के कारण यह 'पिचियाक बांध' के नाम से भी जाता जाता है। इस बांध का निर्माण जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह जी द्वारा करवाया गया। अत: इस बांध को 'जसवन्त सागर बांध' कहा जाता है। इस बांध का निर्माण 1879 ई. से 1889 ई. तक दस साल में हजारों श्रमिकों के निरन्तर श्रम से किया गया।

तत्कालीन लेखों में 9 लाख रूपये खर्च दर्शाया गया है। यह बांध आसपास के अनेक गांवों की हजारों बीघा जमीन के लिए सिंचाई का स्रोत रहा है। वर्षाकाल में यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता है। ब्रिटिशकाल में अतिविशिष्ट मेहमानों के लिए यहां एक विश्राम भवन भी बनवाया गया था। वर्षा ऋतु में प्राकृतिक छटा का आनन्द प्राप्त करने यहां हजारों देशी पर्यटक आते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है के भारत में पर्यटन की प्रचुर सम्भावनाएं हैं। ग्रामीण व तालुका क्षेत्रों में आज भी अनेक प्राचीनतम, पुरामहत्त्व, सांस्कृतिक, स्थापत्य कला से परिपूर्ण, ऐतिहासिक व तीर्थ स्थल है, जिनका प्रचार–प्रसार अति न्यून है। अतिमहत्वपूर्ण होने पर भी पूर्ण प्रचार–प्रसार के अभाव में अनेक क्षेत्र केवल क्षेत्रीय पर्यटन स्थल बनकर रह गये है। यदि पर्यटन विभाग द्वारा इनका व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए तो विदेशी पर्यटकों के लाभान्वित होने के साथ राष्ट्रीय आय में भी आशातीत वृद्धि होगी।

बिलाड़ा आईमाताजी जोड़ में वनस्पतिक भिन्नता व कल्पवृक्ष पर कृषि शोध तथा बलिराजा की भाखरी व हर्ष देवल जैसे पुरामहत्त्व के स्थलों पर भी शोध की आवश्यकता है। जसवन्तसागर बांध के पेटे को सही कर बांध के सौन्दर्यकरण की आवश्यकता है। ग्रामीण भारत में पर्यटन की सम्भावनाएं तलाशना व उनको मूर्त रूप दिलाना ही शोधकर्त्ता का परम ध्येय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. चोयल हरिराम–भारत का आध्यात्मिक चिन्तन: आईपंथ, प्रकाशक–कर्नाटक सीरवी समाज, मैसूर , वर्ष 2011.
[2]. लचेटा जसाराम–सीरवी (क्षत्रिय) समाज खारड़िया का इतिहास एवं बांडेरूवागी, प्रकाशक–जसाराम लचेटा, चेन्नई, वर्ष 2011.
[3]. दीवान माधोसिंह–श्री आईपथ।
[4]. दीवान माधोसिंह–श्री आईमाता का संक्षिप्त इतिहास।
[5]. रतनलाल सीरवी–सीरवी समाज का उद्भव एव विकास, चौधरी प्रिण्टर्स, जोधपुर, 2007.
[6]. रूपकुंअर मेहता–राजस्थान की संत शिरोमणि बाला सती, प्रकाशक–राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1991.
[7]. Cencus of India 2011, Rajasthan, Series–09, Part XII–B, Jodhpur District Cencus Handbook Village & Town Wise Bilara.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.